Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियो एवं ग्रामीण विद्यार्थियो के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

निधि कुमारी

शोध छात्रा, षिक्षाषास्त्र, नेहरू ग्राम भारती विश्वद्यालय, प्रयागराज, उ0 प्र0

प्रस्तावना

षिक्षामानव के विकास में एक साधन के रूप में कार्य करती है षिक्षा ग्रहण कर मनुष्य सभ्य नागरिक बनकर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में सहायक है । जिस प्रकार माता.पिता बच्चे का पालन पोपण करते है जिस प्रकार सूर्य के प्रकाष में पौधे खिल उठते है एवं प्रकाष न मिलने पर सूख जाते है उसी प्रकार व्यक्ति षिक्षा द्वारा फूल के समान खिल जाता है और षिक्षा न मिलने पर वह अपने को इस समाज में अन्य लोगो की अपेक्षा हेय दृप्टि से देखता है । षिक्षा माता के समान पालन एवं पिता के समान उचित मार्गदर्षन प्रदान करती है ।

किषोरावस्था में बालक माध्यमिक स्तर की षिक्षा प्राप्त करता है । कक्षा 11 और 12 को उच्च माध्यमिक स्तर की षिक्षा के रूप में जाना जाता है । माध्यमिक षिक्षा का बालक के व्यक्तिगत, षैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक पर प्रभाव पडता है ।

बालक जब किसी विद्यालय में प्रवेष करता है तब से ही वह समायोजन करना प्रारम्भ कर देता है । समायोजित बालक सदैव प्रगति की ओर अग्रसर होता है । संघर्प पर विजय प्राप्त करने की प्रवृति समायोजन की स्थिति को दर्षाती है । बालक को षारीरिक, भौतिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक आवष्यकताओ की पूति हेतु समायोजन की आवष्यकता होती है । बालक को अपने षैक्षिक विकास हेतु विद्यालय, पाठ्यक्रम एव सहपाठियो से समायोजन, सामाजिक जीवन हेत समुदाय एवं पडोसियो से मधुर सम्बन्ध हेतु एवं संवेगात्मक रूप से सन्तुलित रहने हेतु समायोजन की आवष्यकता पडती है ।

उद्देष्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियो एवं ग्रामीण विद्यार्थियो के समायोजन का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियो एवं ग्रामीण विद्यार्थियो के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

प्रस्तुत षोध अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है षोध हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयो में अध्ययनरत् 50 षहरी विद्यार्थियो एवं 50 ग्रामीण विद्यार्थियो का चयन अध्ययन से सम्बिन्धित उद्देष्यो की पूर्ति हेतु किया गया है साख्यिकी विधियों के अर्न्तगत मध्यमान मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी मूल्य का प्रयोग किया गया है ।

अध्ययन की सीमाएं

1. प्रस्तुत षोध प्रयागराज जनपद के विद्यार्थियो तक ही सीमित है ।
2. प्रस्तुत अध्ययन हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 और 12 वर्प के षहरी एंव ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियो तक ही सीमित है ।

प्रदत्तो का प्रस्तुतीकरण, विष्लेपण एवं व्याख्या

उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियो एवं ग्रामीण विद्यार्थियो के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

सारणी संख्या–1.0.

उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियो एवं ग्रामीण विद्यार्थियो के समायोजन में अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

समूह	N	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**मानक त्रुटि**	df	C.R	**सारणी मान**
षहरी छात्र	50	150.2	16.98	3.34	98	4.37	t=.05=1.97
षहरी छात्राएँ	50	137.5	16.28				T=.01=2.60
निष्कर्ष	शून्य परिकल्पना.....दोनो स्तरो पर अस्वीकृत						

*df (.05) तथा (.01) पर सार्थक

चूकि C.R = 4.37 का मान df 98 पर df (.05) तथा (.01) पर सार्थकता स्तरो के सारणी मान क्रमष 1.97 व 2.60 से अधिक है अतः मध्यमानों में अन्तर दोनो स्तरो .05 तथा .01 पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना *'उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियो एवं ग्रामीण विद्यार्थियो के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर* नही *है'* अस्वीकृत होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दुबे डाॅ0 मनीप एवं दुबे डॉ0 विभा, उदीयमान भारती समाज में षिक्षक, षारदा पुस्तक भवन, यूनिवसिर्टी रोड, प्रयागराज
2. कबीर एच 1995, स्वतन्त्र भारत में षिक्षा, राजपूत प्रकाषन, दिल्ली
3. कपिल, एच. के. 2000. सांख्यिक के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।